श्री जी गोसदन
नोएडा

गो संदेश

वर्ष : 13 • अंक : 10 • जनवरी, 2026

आप सभी गो भक्तों को नववर्ष 2026 की हार्दिक शुभकामनाएँ।
हम गौमाता से प्रार्थना करते हैं कि आप और आपके परिवार के लिए यह साल मंगलमय रहे।

सम्पादकीय

आदरणीय बन्धुवर!

सादर अभिवादन,

आशा है सानन्द होंगे। मौसम अब करवट ले रहा है। शीतलता निरन्तर घटेगी, उष्णता बढ़ेगी। सही मायने में अब यह मौसम नव सृजन के लिए प्रेरित करता है।

जब तक यह अंक आपके हाथों में पहुंचेगा। भारत सरकार भी अपनी बजटीय तैयारियाँ पूर्ण कर चुकी होगी। आगामी 1 फरवरी को बजट प्रावधानों की घोषणा आदरणीय वित्त मंत्री साहिबा करेंगी। सरकार का निरन्तर ध्यान कृषि व किसान पर बना हुआ है। पिछले अनेक वर्षों से सरकार ने इस ओर ध्यान दिया है। यह "ध्यान" इस बार भी होगा ऐसी आशा हम सभी को है।

भारत लगातार GDP Growth में संसार में 1 नम्बर पर है। इस वर्ष यह रेट 7.2% सम्भावित है। विश्व बैंक ने इसका मुख्य कारण घरेलू खपत माना है। ऐसा लगता है कि हमने अपने प्रिय प्रधानमंत्री के ध्येय वाक्त "आत्म निर्भर भारत" को आत्मसात करना प्रारम्भ कर दिया है। आज दुनिया का सबसे बड़ा बाजार हमारे पास है। आज जिन–जिन वस्तुओं का हम आयात करते हैं उनका निर्माण अगर भारत में ही होना प्रारम्भ हो जाए तो हमको संसार की अनेक ताकतों के समक्ष नतमस्तक नहीं होना पड़ेगा। चूंकि हम "गाय माता" से जुड़े हैं गाय व कृषि एक दूसरे के पूरक हैं। कृषि का उन्नयन ही गाय माता के बचाव की गारन्टी है। अभी 25 जनवरी को दैनिक जागरण में प्रसिद्ध कृषि अर्थशास्त्री डॉ० अशोक गुलाटी की वार्ता का प्रकाशन छपा था। उस वार्ता के कुछ अंश आपके अवलोकनार्थ यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ –

"कृषि क्षेत्र में किन सुधारों की जरूरत है?

बड़े स्तर पर सिर्फ तीन सुधार की जरूरत है। पहला कृषि क्षेत्र से जुड़े 45 प्रतिशत वर्कफोर्स (कार्यबल) को कम करना है। दूसरा, उर्वरकों व कृषि उपकरणों से सब्सिडी खत्म की जाए। तीसरा, धान की पैदावार को कम कर हाई वैल्यू क्राप यानी उच्च कीमत देने वाली फसलों की उत्पादकता बढ़ाना। अब मैं एक–एक सुधारों की व्याख्या करता हूँ।

पहला: मैंने आपको पहले बताया था भारत में 45 प्रतिशत वर्कफोर्स कृषि क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। जीडीपी में इनका योगदान मात्र 17 प्रतिशत है। यही सबसे बड़ी गड़बड़ी है।

शेष पृष्ठ 2 पर...

अध्यक्ष की कलम से

परम स्नेही मित्रगण!

नमन, वन्दन एवं अभिनन्दन,

मैं समस्त श्री जी गोसदन परिवार की ओर से आप सभी स्वजनों की समृद्धि, स्वास्थ्य, खुशहाल जीवन की ईश्वर व गौमाता से कामना करता हूँ। आप सभी परिवारजनों का जीवन सदैव स्वस्थ व प्रसन्नचित रहे।

मित्रों जनवरी, 2026 का हवन भारत विकास परिषद् स्वर्णिम नोएडा एवं पंजाबी समाज नोएडा द्वारा कराया गया। दोनों संस्थाओं की कार्यकारिणी सहित सभी ने गौशाला में आयोजित हवन में आहुति दीं, हवन में लगभग 600 लोगों ने गौमाता का आशीर्वाद एवं प्रसाद ग्रहण किया।

मित्रों इस माह 1 जनवरी, 2026 को शुभम अग्रवाल जी ने गौमाता को 56 भोग खिलाकर गोमाता का आशीर्वाद लिया एवं श्री प्रदीप गुप्ता जी ने गौशाला में ग्वालों के लिए भोजन–प्रसाद वितरण किया।

मित्रों इस मकर संक्रान्ति के पर्व पर 14–15 जनवरी, 2026 को 4000 गो भक्तों ने दलिया, भूसा, हरा चारा, गुड़, चोकर गो माता को खिलाया एवं आशीर्वाद लिया।

प्रिय मित्रों इस माह हवन स्थल का जीर्णोधार का काम चल रहा है। हमें उम्मीद है मार्च का हवन हम लोग नये हवन स्थल पर करेंगे।

मित्रों यह कहा जाता है कि भजन/शास्त्रीय संगीत सभी के मन को शान्ति एवं उत्साह प्रदान करता है, इसी कड़ी में श्री मनोज अग्रवाल जी के सौजन्य से गौशाला परिवार में साऊन्ड लगा दिया गया है। हमें उम्मीद है इससे गौमाता एवं गोभक्त जन प्रसन्न रहेंगे।

मित्रों इस बार गणतन्त्र दिवस पर गौशाला में झंडा रोहण किया किया, जिसमें गौशाला की कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित थे। गणतन्त्र दिवस के अवसर पर गौशाला के बच्चों ने देशभक्ति के गीत प्रस्तुत किये। गीतों ने सभी का मन मोह लिया। इस मौके पर Y.S.S की टीम का सहयोग रहा।

मित्रों इस माह गौतमबुद्ध नगर के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था) श्री राजीव नारायण मिश्र ने गौशाला का दौरा किया। गौशाला की व्यवस्था देख–रेख से प्रसन्न हुए।

शेष पृष्ठ 2 पर...

मासिक हवन

दिनांक : रविवार, 1 फरवरी, 2026 • **समय :** प्रातः 9.00 बजे • **स्थान :** गोशाला प्रांगण

यजमान : **श्री एन एल गुप्ता,** सेक्टर 34; **श्री मूलचंद कंसल,** सेक्टर 49; **श्री निशांत गर्ग,** सेक्टर 55; **श्री विनय गुप्ता,** सेक्टर 137; **श्री नरेंद्र गुप्ता,** सेक्टर 49; **श्री पुरुषोत्तम तापड़िया,** सेक्टर 75; **श्री विनोद शर्मा** सेक्टर 11; **लता विनोद रंजन गर्ग।**

सम्पादकीय... (पृष्ठ 1 का शेष...)

पहले, हमें यह वर्कफोर्स को कम करना है। यहाँ से लोगों को निकालकर दूसरे सेक्टर से जोड़ना है। ताकि उनकी आय भी बढ़े और देश की जीडीपी में उनका योगदान भी। चीन में 20 करोड़ लोग कृषि क्षेत्र से निकलकर शंघाई, हांगकांग में चल रहे निर्माण कार्यों से जुड़े हैं। अन्य विकसित देशों में भी यही ट्रेंड देखा गया है।

दूसराः उर्वरकों व उपकरणों पर सब्सिडी खत्म कर सरकार किसानों को खाते में सीधी मदद पहुंचाए। इससे उर्वरकों के असंतुलित उपयोग और लीकेज पर भी रोक लगेगी। हाल ही में चीन सरकार ने 24–25 बिलियन डालर किसानों के खाते मे दिया है।

तीसराः हाई वैल्यू क्राप यानी फल–सब्जियों को खेती, मुर्गी पालन या डेयरी प्लांट व झींगा पालन में निवेश होना चाहिए। अमेरिका में हमारा सबसे बड़ा बाजार झींगा मछली सप्लाई का है। आंध्र प्रदेश के किसान बड़े पैमाने पर झींगा पालन व उत्पादन कर रहे हैं और आम किसानों की तुलना में दस गुना ज्यादा कमा रहे हैं। यदि आंध्र प्रदेश में नीली क्रांति हो सकती हैं, तो ओडिशा, तमिलनाडु, केरल, बंगाल सहित समुद्र किनारे बसे राज्यों में क्यों नहीं हो सकता है? नौ राज्य और चार केंद्रशासित प्रदेश की मुख्य भूमि और द्वीपों को मिलाकर हमारे पास 7,516.6 किमी लंबी तट रेखा है। खाड़ी देशों में पैदावार नहीं हो सकता है, तो पंजाब–हरियाणा के किसानों के लिए वहां बाजार तलाशा क्यों नहीं जा सकता है। भारत के पास आवश्यकता से कहीं अधिक खाद्यान्न की उपलब्धता है। पंजाब–हरियाणा के किसान गेहूं–चावल की पैदावार बढ़ाकर उसे गोदामों में सड़ाने के बजाय हाई वैल्यू क्राप (उच्च कीमत पर बिकने वाली खाद्य सामग्री) की ओर क्यों नहीं जा सकते हैं ? जैसा महाराष्ट्र के कई किसान समूह कर रहे हैं। हाल ही में मैंने नासिक में एक फार्म का दौरा किया। वहां किसान अंगूर का उत्पादन कर यूरोप निर्यात कर रहे हैं। टाटा इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेस के अध्ययन के मुताबिक उन किसानों की आय में दस गुना तक वृद्धि हुई है। बड़े पैमाने पर किसान इस तरह के प्रयोगों का फायदा ले पाएं, इस बारे में विचार हो।

- **इतने सहज उपाय उपलब्ध हैं तो किसी भी सरकार ने इन सुधार नीतियों को लागू क्यों नहीं किया? परेशानी कहां है?**

  यदि आप कृषि मंत्रालय से देशभर के किसानों की सूची मांगेंगे, तो वह आपकों नहीं दे पाएंगे। दरअसल लैंड रिकार्ड व्यवस्थित नहीं होने की वजह से यह पता लगाना बहुत मुश्किल है कि वास्तविक किसान कौन हैं। 25–30 प्रतिशत किराएदार हैं, जिनके पास लैंड रिकार्ड नहीं है। किसान बंटाई पर काम कर रहें हैं। सीधी सब्सिडी दी जाए तो किसके खाते में जाएगी...यह परेशानी है।

- **किसानों का रिकार्ड कैसे बनाया जाए?**

  सरकार चाहें तो स्पेस टेक्नोलाजी का उपयोग कर छह महीने के भीतर सारे लैंड रिकार्ड दुरुस्त कर सकती है।

- **आपने उर्वरक सब्सिडी को 'डायनासोर' करार दिया था। क्यों?**

  उर्वरक सब्सिडी सिर्फ पैसों का मामला नहीं है...यह किस तरह से इंसान व पर्यावरण की सेहत को प्रभावित कर सकता है, इसका जीवंत उदाहरण है। भारत में उर्वरक सब्सिडी लगभग दो लाख करोड़ रुपये की है। इसमें भी यूरिया पर 80–85 प्रतिशत सब्सिडी है। फास्फेट व पोटाश पर सब्सिडी कम है। यूरिया पर सब्सिडी ज्यादा होने की वजह से किसान आवश्यकता से कहीं अधिक यूरिया का उपयोग कर रहे हैं। इससे मिट्टी में असंतुलन पैदा हो रहा है। यूरिया के अधिक उपयोग से इससे निकलने वाली नाइट्रोजन से फसलों में हरियाली तो अधिक होती है, लेकिन पोटाश व फास्फेट की कमी से फलन कम है। पैदावार 30–40 प्रतिशत तक प्रभावित हो रही है। जिस तरह से उर्वरकों का छिड़काव किया जाता है, उसमें से सिर्फ 35–40 प्रतिशत यूरिया ही फसलों को मिल रही है, जबकि बाकी यूरिया नाइट्रस आक्साइड गैस बनकर हवा में घुल रहा है, जो कार्बन डाइआक्साइड की तुलना में 273 गुना ज्यादा नुकसानदायक है। भूजल को भी नुकसान हो रहा है। थायराइड, डायबिटीज व कैंसर जैसी बीमारियां हो रही हैं। इसके बजाय ड्रिप इरिगेशन का उपयोग होना चाहिए। जिंक में सब्सिडी नहीं होने की वजह से किसान इसका उपयोग नहीं कर रहे हैं, इसलिए गेहूं–चावल में जिंक की मात्रा घट गई है। इसकी वजह से बच्चों में स्टंटिंग (बौनापन या विकासरोध) की शिकायत सामने आ रही है।

- **यूरिया लीकेज कितना है? कैसे रोकें?**

  दो लाख करोड़ में 20 प्रतिशत यदि लीकेज है। 40 हजार करोड़ का सालाना नुकसान हो रहा है। मैं तो इसे घोटाला कहूंगा। मजे की बात यह है यह आंकड़ा कृषि मंत्रालय के बजट (1.37 लाख करोड़ रुपये) से कम है। सब्सिडी बंद कर इस लीकेज को रोक सकते हैं। इस राशि को शोध के लिए दे सकते हैं।"

भारत सरकार को एक 45 Kg के यूरिया बोरे की लागत लगभग 2200/– के आसपास पड़ती है। जिसको मात्र 250/– में किसान को उपलब्ध करा दिया जाता है। अतः प्रति बोरे के हिसाब से 1950/– Subsidy भारत सरकार खर्च करती है। 2025–26 में 400 लाख टन यूरिया की खपत होने का अनुमान है। एक मोटे अनुमान के हिसाब से प्रतिदिन 30 लाख टन गोबर निकलता है। यह साल का 10950 लाख टन बनता है। मोटी–मोटी इससे खाद बनायी जाए तो 400 लाख टन से अधिक खाद बन सकती है। अगर गोबर का सदुपयोग करके खाद बनायी जा सकती है तो देश को प्रतिवर्ष 2 लाख करोड़ की धनराशि की बचत हो सकती है। आज गोबर की मामूली प्रतिशत ही खाद के रूप में प्रयोग होता होगा। सामान्यतया इसका प्रयोग कण्डों के रूप में ही हो रहा होगा। उज्जवला स्कीम आने के बाद भारत सरकार घर–घर गैस पहुँचा रही है जिससे महिलाओं को धुएं से बचाया जा सके। अतः आने वाले समय में कण्डों का उपयोग भी कम ही होगा। यह सारा गोबर waste के रूप में समस्या ही पैदा करेगा।

हमारा देश उत्तम कृषि के लिये ही जाना जाता था। कृषि के आधार पर ही कभी हम "सोने की चिड़िया" थे। तब भी गोबर को ही खाद के रूप में उपयोग किया जाता था।

मजे की बात है कि इस यूरिया का अधिकांश हमें आयतित करना पड़ता है। गोबर के खाद के रूप में प्रयोग से इस क्षेत्र में भी भारत आत्मनिर्भर बने। यह आज की महती आवश्यकता है। भारत सरकार इस ओर तुरन्त ध्यान दे, ऐसी विनती है।

– आपका अपना

महेश बाबू गुप्ता
(mahesh@mbgupta.com)

अध्यक्ष की कलम से... (पृष्ठ 1 का शेष...)

मित्रों इस महीने पूज्य संत राजूदास जी महाराज (अयोध्या) ने गौशाला का भ्रमण एवं गौमाता की पूजा–अर्चना की तथा गौशाला में आपने आशीर्वचन दिया।

मित्रों इस माह नोडल अधिकारी (उ.प्र. सरकार) एवं डिप्टी CVO गौतमबुद्ध गौशाला का दौरा किया। गौशाला की व्यवस्था का निरीक्षण किया एवं गौशाला व्यवस्था को उत्तम बताया।

मैं सभी के उज्जवल भविष्य एवं सुख समृद्धि की कामना करता हूँ। आप गौशाला का सहयोग एवं समर्थन करते रहें और हम गौशाला का पूर्ण निष्ठा से संचालन करते रहेंगे।

– आपका अपना

विकास अग्रवाल
(vikas18noida@yahoo.com)

गौशाला में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ

4 जनवरी के हवन में भारत विकास परिषद स्वर्णिम नोएडा के अध्यक्ष श्री प्रमोद शर्मा को सम्मानित करते हुए गोशाला के अध्यक्ष व अन्य

4 जनवरी के हवन में पंजाबी समाज, नोएडा के अध्यक्ष श्री राजीव अजमानी को सम्मानित करते हुए गोशाला के अध्यक्ष व अन्य

अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था) श्री राजीव नारायण मिश्र को गोशाला भ्रमण पर सम्मानित करते हुए गोशाला की टीम

नव वर्ष 2026 के शुभ अवसर पर श्री शुभम् अग्रवाल जी द्वारा गौ सेवा हेतु 56 भोग का आयोजन किया गया

4 जनवरी को आयोजित हवन का छायाचित्र

गणतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित ध्वजारोहण के कार्यक्रम का दृश्य

गौसदन में सहयोग के प्रकार

मासिक हवन (प्रातः 9 बजे)	: रू॰ 3,100/– (मास के प्रथम रविवार को – यजमान सहयोग)
गौग्रास योजना	: रू॰ 500 से 5,000/– तक मासिक
हरा चारा सहयोग	: रू॰ 5,100/–
सवामनी दलिया	: रू॰ 5,100/–
गाय अडॉप्शन योजना	: रू॰ 11,000/– (प्रति गाय) (प्रतिवर्ष – गाय की आयु तक)
गौदान	: रू॰ 31,000/–
छप्पन भोग	: रू॰ 31,000/–
भूसा सहयोग	: रू॰ 1,01,000/– (लगभग 1 ट्रक)
खल, चोकर व छिलका	: रू॰ 1,01,000/–

अपील

वर्तमान में गौशाला में लगभग 1700 से अधिक गोवंश हैं। भूसा/चारे का खर्च भी लगातार बढ़ रहा है। गोपाष्टमी में जिन बंधुओं ने भूसा दान की घोषणा की थी, उन सभी से विनम्र निवेदन है कि इस कार्य को यथाशीघ्र सम्पन्न करें।

श्री जी गोसदन

(पंजीकृत सोसायटी सं.–592, अधिनियम सं.–21, सन् 1860 के अर्न्तगत)

भूखण्ड सं. 7, सैक्टर 94, नौएडा (उ.प्र.)

मो. : 8882425010

ई–मेल : shreejeegausadan94@gmail.com

वेबसाइट : www.shreejeegausadan.com

अध्यक्ष : **सीए विकास अग्रवाल** (मो. : 9810015863)

महासचिव : **श्री सुशील भारद्वाज** (मो. : 7982002929)

कोषाध्यक्ष : **सीएस संजय गुप्ता** (मो. : 9873410688)

प्रबन्धक : **श्री संतोष सिंह** (मो. : 7428350639)

दान/सहयोग राशि हेतु जानकारी :

SHREE JEE GAUSADAN

Account No. : **923010022147753**

Name of Bank : **AXIS BANK**
Sector 44, Noida (U.P.)

IFSC Code : **UTIB0001788**

अथवा **QR** कोड स्कैन करें

PRAVEK

100% शुद्ध और पटिश्रुत

200 मिली के पैक में उपलब्ध

गोजल

पाचन क्रिया सुधार हेतु

आयुर्वेद में गाय के गौमूत्र को एक संजीवनी कहा गया है, जो रोगों को भगाए और दीर्घायु प्रदान करे।

प्रवेक गोजल को आसवन के बाद काँच की बोतल में पैक किया जाता है, ताकि वह सभी अशुद्धियों से मुक्त हो व गोजल के स्वाभाविक रुपी अम्लीय गुणों से बचाता हो।

उपयोग

- कृमि रोग
- कण्डू रोग
- कुष्ठ रोग
- दोष जन्य उदर विकार
- अफारा
- मेदोरोग
- अध्यमान, आदि में लाभकारी

मात्रा

20 मिली प्रवेक गौजल को जल में मिलाकर दिन में एक बार या चिकित्सक के परामर्शानुसार लें।

CUSTOMER CARE
+91 9990990999 | customercare@pravek.com
www.pravek.com